Sanvahak, Vol.-1; Issue-2 (Oct.-Dec.) 2025 : PP-16-20

Sanvahak (संवाहक)

A Peer Reviewed, Multidisciplinary (All Subjects) & Multilingual (All Languages) Quarterly Research journal

ISSN : 3108-1347 (Online)
Vol.-1; Issue-2 (Oct.-Dec,) 2025
Page No.- 16-20
©2025 **Sanvahak**
https:// sanvahak.gyanvividha.com
Author's :

डॉ. गोविन्द कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत,
इंदर सिंह रावत राजकीय महाविद्यालय,
पौखाल, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड.

Corresponding Author :

डॉ. गोविन्द कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत,
इंदर सिंह रावत राजकीय महाविद्यालय,
पौखाल, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड.

वैदिक साहित्य एवं शिक्षण पद्धति : एक परिचय

शोध सार : भारतीय परम्परा के अनुसार वेद अपौरुषेय हैं। वे सदियों पूर्व से मानव-जीवन के कल्याण के साधन बनकर उन्हें अनुप्राणित करते आये हैं। इनमें ज्ञान-विज्ञान, धर्म-दर्शन, सदाचार-संस्कृति, सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन से सम्बन्धित सभी विषय उपलब्ध हैं। अतएव विद्वानों ने इसे विश्व-कोष के रुप में मान्य किया है। वेदों के मूलमन्त्रों का समूह संहिता है। वेद की चार संहिताएं ऋग्वेद संहिता, यजुर्वेद संहिता, सामवेद संहिता एवं अथर्ववेद संहिताएं हैं। ऋग्वेद संहिता में देवताओं की स्तुति-परक मन्त्रों का संग्रह है, जो पद्यात्मक एवं छन्दोबद्ध है। यजुर्वेद-संहिता यज्ञ क्रिया की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। इसमें ऋचाओं के साथ-साथ गद्य भी हैं, सामवेद संहिता साम या गान का संकलन है। इसमें ऋग्वेद के मन्त्रों का समावेश है जिनका गान सोम यज्ञ के समय अभिप्रेत था। अथर्ववेद संहिता को अथर्वन् और अंगिरस वेद भी कहा जाता है। इसमें 20 काण्ड हैं। इसके अधिकांश मन्त्र ऋग्वेद संहिता से लिये गये हैं। इसमें रोग दूर करने, पापशुद्धि, शत्रुविनाश तथा मंगलकामना व्यक्त करने वाले मन्त्र हैं।

बीज शब्द : वैदिक काल एवं साहित्य, दर्शन, शिक्षक एवं शिष्य, शिक्षण पद्धति, गुरुकुल परम्परा आदि।

ऋग्वेद विश्व साहित्य का सबसे प्राचीनतम ग्रंथ है। इसके मंत्र प्रत्येक संहिताओं में उपलब्ध है। "भाषा, शैली, व्याकरण एवं मंत्रों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि यह किसी एक समय की किसी एक ऋषि की रचना नहीं, किन्तु विभिन्न काल में विभिन्न ऋषियों द्वारा हुई रचनाओं का संग्रह-ग्रंथ हैं। इसीलिए इसे 'ऋग्संहिता' भी कहते हैं। छंदों एवं चरणों से युक्त मन्त्रों को 'ऋक्' या 'ऋचा' कहते हैं और ऋचाओं के संग्रह का नाम 'ऋक्संहिता' है।"[1] वैदिक साहित्य में भारतीय-संस्कृति, धर्म-दर्शन, ज्ञान-विज्ञान, इतिहास एवं काव्य की विविध सामग्री उपलब्ध है। इसे

समस्त ज्ञान का मूल स्रोत माना जाता है।

वैदिक साहित्य में भारतीयों के आचार-विचार, रहन-सहन, धार्मिक-विश्वास, दार्शनिक चिन्तन, सामाजिक-व्यवस्था एवं ऐतिहासिक अध्ययन की विपुल सामग्री ऋग्वेद की ऋचाओं में उपलब्ध है। विदेशी साहित्यकार मैक्समूलर का कथन है कि "विश्व साहित्य में वेद उस रिक्त स्थान की पूर्ति करता है जो किसी भाषा की साहित्यिक कृति में संभव नहीं है। यह हमें उस काल तक पहुँचा देता है जिसका हमारे पास कोई अभिलेख नहीं है।"[2] भारतीय वेद संपूर्ण साहित्य के प्राचीनतम ग्रंथ एवं ज्ञानवर्धक साहित्य है। वेदों में ज्ञान का विशाल भंडार है। अनेक महर्षि, विद्वानों, साहित्यकारों एवं दार्शनिकों ने एक मत में स्वीकार किया है कि भारतीय वेद भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण अभिलेख है।

साहित्यकार की वैदिक साहित्य की विषय वस्तु, धर्म-दर्शन एवं अन्य सामग्री से प्रभावित होकर लिखते हैं। विदेशी साहित्यकार विन्टरन्ट्ज़ का कथन है कि "भारतीय धर्म के विकास की प्रारम्भिक दशा को भारोपीय लोगों के वस्तुतः समग्र मानव जाति के पुराण शास्त्र को जानने के लिए ऋग्वेद के सूक्तों से अधिक मूल्यवान सामग्री विश्व में नहीं है।"[3] ऋग्वेद में वर्णित ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक सामग्री के अध्ययन के पश्चात् यही कहा जा सकता है कि ऋग्वेद विश्व का सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ है और इसे विश्व की सर्वप्रथम कृति होने का गौरव प्राप्त है। अतः प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति, पुराण शास्त्र, तुलनात्मक भाषाशास्त्र, धार्मिक एवं दार्शनिक मान्यताओं के ज्ञान के लिए ऋग्वेद के अध्ययन की महती आवश्यकता है।

वेदों के अध्ययन के बिना भारतीय संस्कृति एवं भारतीयों के जीवन-दर्शन को समझना बड़ा कठिन है। मनु ने तो उन्हें सब धर्मों का मूल कहा है "वेदोऽखिलो धर्ममूलम्।"[4] वेद न केवल भारतीय समाज द्वारा समावृत हैं बल्कि विश्व के महान् विद्वानों ने भी उन्हें श्रद्धा की दृष्टि से देखा है तथा उनकी महत्ता को स्वीकार किया है। यही कारण है कि पतञ्जलि ने षडाङ्ग वेदाध्ययन पर अधिक बल दिया है- "ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडाङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च।"[5] वेदों में अध्यात्म-दर्शन का. उत्कृष्ट भण्डागार भरा पड़ा है किन्तु उनके प्रतिपादन की दिशा अर्वाचीन प्रतिपादन-शैली से सर्वथा भिन्न है। उपनिषदों में इसी का विवेचन किया गया है। मानव का जीवन-दर्शन वेदों में प्रतिपादित है। भारतीयों के 'आचार-विचार, रहन-सहन, धर्म-दर्शन एवं अध्यात्म को समझने के लिए वेदों का अध्ययन परमावश्यक है। इस प्रकार विश्व-साहित्य के इतिहास में वेदों का महत्वपूर्ण स्थान है।

ऋग्वेद प्राचीन भारतीय साहित्य का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। ऋग्वेद में अधिकांशतः धार्मिक सूक्त भरे हुए हैं। केवल दस मण्डल में कुछ सूक्त ऐहिक विषयों से सम्बद्ध है। "ऋग्वेद के मन्त्र मुख्यतः देवताओं के स्तुतिपरक हैं। इन सूक्तों में उनके पराक्रम, महत्व एवं उनकी दयालुता का वर्णन है। इन देवताओं से गोधन, पुत्र, अभ्युदय, शत्रुविजय एवं दीर्घायुष्य के लिए प्रार्थना की गई है। ऋग्वेद के दस मण्डलों में 2 से 7 मण्डल प्राचीन है। इनमें प्रत्येक मण्डल एक ही ऋषि एवं उनके वंशजों द्वारा रचित है। जैसे द्वितीय मण्डल के ऋषि गृत्समद, तृतीय के विश्वामित्र, चतुर्थ के वामदेव, पञ्चम के अत्रि, पष्ठ के भारद्वाज, सप्तम के वसिष्ठ एवं उनके वंशज हैं। इनमें गृत्समद, विश्वामित्र, वसिष्ठ आदि ऐतिहासिक पुरुष हैं। अष्टम मण्डल कण्व एवं आङ्गिरसों के उद्गाता वंश के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें 11 सूक्तों का बालखिल्य भी है। नवम मण्डल के प्रायः सभी सूक्त एक ही सोम देवता को सम्बोधित करते हैं। सोम एक बूटी का नाम है। जिसे कूटकर एक प्रकार का रस अभिषव किया जाता था, जिसे देवताओं को चढ़ाया जाता था और यज्ञ के अवसर पर उसका पान किया जाता था। ईरानी देवता भी इस प्रकार का आसव पीते थे जिसे वे 'होम' (Haoma) कहते हैं।"[6]

ऋग्वेद में पशु-पालन, कृषिकर्म, व्यापार एवं उद्योग, यज्ञ, दान आदि धार्मिक कृत्यों का विस्तृत वर्णन मिलता है। राजा, पुरोहित एवं युद्ध का भी वर्णन आया है। राजा के यहाँ पुरोहित होता था जो यज्ञ करता था । यज्ञ में पति-

पत्नी दोनों भाग लेते थे। ऋग्वेद के एक मन्त्र में आया है कि "दम्पती एकचित्त होकर सोम का अभिषव करते थे, उसे छानते थे और उसमें दूध मिलाते थे तथा देवताओं की स्तुति करते थे।"[7] ऋग्वेद के कई उदाहरण मिलते हैं जिनमें शत्रु पर विजय तथा दीर्घायुष्य की कामना की गई है। ऋग्वेद का 'दाशराज्ञयुद्ध' बत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इस युद्ध का नेता सुदास था, जिसके विरुद्ध भद्र, द्रयु, तुर्वसु आदि दस राजा युद्ध करते थे। इस युद्ध में विश्वामित्र और वसिष्ठ-जैसे महर्षि भी भाग लेते थे।

वैदिक कालीन शिक्षा पद्धति का स्वरूप : वास्तव में प्राचीन भारत में शिक्षा ऐसी ताकत थी जो मानव को विकसित एवं सशक्त बनाकर उसके समस्त गुणों का विकास करके उसे जीवन के लिए तैयार करती थी। "इसलिए यह कहा भी गया कि उस मनुष्य को जो विभिन्न संस्कृति, भाषा, शास्त्रों और साहित्यों का ज्ञान रखता हो परन्तु उसकी अन्तदृष्टि का जागरण नहीं हो पाया, तो वह विद्वान-विद्वान नहीं। भारत में 2500 ई0पू0 से 500 ई0पू0 तक वेदों का वर्चस्य रहा। इतिहासकार इस काल को वैदिक काल कहते है। वैदिक काल में हमारे देश में एक समृद्ध शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ। इस शिक्षा प्रणाली को वैदिक शिक्षा पद्धति कहते हैं।"[8] वैदिक शिक्षा पद्धति का विकास वैदिक काल में हुआ और वेद वैदिक धर्म एवं दर्शन पर आधारित थी।

वैदिक काल को भी भिन्न-भिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न उपकालों में विभाजित किया है "शिक्षा की दृष्टि से उसे दो उपकालों में विभाजित किया जाता है। प्रारम्भिक वैदिक काल और उत्तर वैदिक काल। उत्तर वैदिक काल में शिक्षा पर ब्राह्मणों का एक छात्र अधिकार हो गया था। इसलिए कुछ विद्वान उत्तर वैदिक कालीन शिक्षा प्राणी को ब्राह्मणीय शिक्षा पद्धति भी कहते है क्योंकि यह शिक्षा प्रणाली हिन्दुओं द्वारा विकसित हुई थी इसलिए कुछ विद्वान इन दोनों को हिन्दू शिक्षा पद्धति भी कहते है, हमारी दृष्टि से इन्हें वैदिक शिक्षा प्रणाली कहना अधिक उपयुक्त है और वह इसलिए की 2000 वर्ष लम्बे इस वैदिक काल में शिक्षा प्रणाली में मूलभूत समानता रही थी। केवल ज्ञान में विकास के साथ-साथ इसकी पाठ्यचार्य और शिक्षण विधियों में विकास हुआ था।"[9]

वैदिक काल में विद्यारम्भ संस्कार : वैदिक काल में शिक्षा का शुभारम्भ विद्यारम्भ संस्कार से होता था। इस संस्कार के माध्यम से छात्र गुरुकुल में गुरु के समीप जाकर मंत्र उच्चारण एवं विधि-विधान के साथ शिक्षा प्रारंभ करता था। "यह संस्कार उस समय होता था जब बालक प्राथमिक शिक्षा आरम्भ करता था। इस संस्कार के समय बालक को अक्षर ज्ञान कराया जाता था। बालक पटले सरस्वती, विनायक और अपने परिवार के देवताओं की उपासना करता था। उसके बाद गुरु उससे वर्णमाला के अक्षरों को लिखाता था। डॉ. ए0 एस0 अल्तेकर के अनुसारः विधारम्भ संस्कार, उपनयन संस्कार के अनेक वर्षों बाद उस समय आरम्भ हुआ जब वैदिक संस्कृत, जनसाधारण की बोलचाल की भाषा नहीं रह गई थी। इस संस्कार के विषय में डॉ0 वेद मित्र ने लिखा है "यह संस्कार पांच वर्ष की आयु में होता था और साधारणतः सब जातियों के बालकों के लिए था।"[10]

वैदिक काल में उपनयन संस्कार : वैदिक काल में शिक्षा पद्धति के अनुसार शिक्षा का आरंभ उपनयन संस्कार के माध्यम से भी होता था यह भी विधि-विधान एवं मंत्र उच्चारण के साथ होता था। "यह संस्कार उस समय होता था जब बालक गुरु के संरक्षण में वैदिक शिक्षा आरम्भ करता था। 'उपनयन का शाब्दिक अर्थ है "पास ले जाना"। दूसरे शब्दों में बालक को वैदिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए गुरु के पास ले जाया जाता था। गुरु बालक को पहले "सावित्री मंत्र" अर्थात "गायत्री मंत्र" का उपदेश देता था और उसके बाद उसे शिक्षा देना आरम्भ करता था।"[11] वैदिक शिक्षा पद्धति का यह उपनयन संस्कार शिक्षा पद्धति का महत्वपूर्ण अंग रहा है। इसमें शिष्य शिक्षा आरंभ करने हेतु गुरु के समीप जाकर विधि-विधान एवं मंत्र उच्चारण के साथ शिक्षा आरंभ करता था।

शिक्षा का समापन भी वैदिक काल में एक संस्कार के रूप में बनाया जाता था क्योंकि गुरुकुल में जब शिष्य ब्रह्मचर्य आश्रम और अपनी संपूर्ण शिक्षा पूर्ण करने के बाद गृहस्थ जीवन में प्रवेश करता था तब यह समापवर्तन

संस्कार होता था जो आज आधुनिक युग में दीक्षांत समारोह माना जाता है। "समावर्तन का शाब्दिक अर्थ है-"घर लौटना"। यह संस्कार लगभग 25 वर्ष की आयु में होता था, जब छात्र गुरुकुल से लौटकर अपने घर जाता था और ब्रह्मचर्य आश्रम का परित्याग करके गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करता था। जिस दिन यह संस्कार होता था, उस दिन दोपहर के समय छात्र स्नान करके और नये वस्त्र धारण करके गुरु के समक्ष उपस्थित होता था। गुरु पटले उसे मधुपर्क देता था और आधुनिक युग दीक्षान्त भाषण के रूप में उसे "समावर्तन उपदेश देता था। इस उपदेश का कुछ अंश इस प्रकार है-सर्वदा सत्य बोलना। अपने कर्तव्य का पालन करना। स्वाध्याय में प्रमाद मत करना जो अच्छे कार्य किये है, उनका अनुकरण करना, श्रद्धा से दान देना। तुम्हें हमारा यही आदेश है। यही उपदेश है।"[12] इस प्रकार वैदिक शिक्षा पद्धति का शुभारंभ एवं दीक्षांत कार्यक्रम समाप्त होता था आज वर्तमान समय में समापवर्तन संस्कार का नया रूप दीक्षांत समारोह देखने को मिलता है। जिसमें गुरुकुल या विश्वविद्यालय का कुलपति अपने सभी शिष्यों को उपदेश देकर नया जीवन आरंभ करने का आदेश देता है। और विद्यालय शिक्षा का समापन होता है।

वैदिक काल में गुरुकुल व्यवस्था : वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली में शिक्षा की शिक्षण व्यवस्था साधारण एवं प्राकृतिक थी। "प्राचीन भारतीय शिक्षा की एक मुख्य विशेषता गुरुकुल प्रणाली थी। गुरुकुल किसी सुन्दर प्राकृतिक स्थान में, साधारणतः किसी ग्राम नगर के निकट होते थे। ताकि छात्रों की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकें और उन्हें भिक्षाटन की सुविधा रहे। छात्र अपने गुरु के पास उसके कुल के सदस्य के रूप में रहकर ज्ञान का अर्जन करते थे और उससे वास्तविक जीवन की शिक्षा प्राप्त करते थे। दो गुरु के उच्च विचारों और आदर्शों को अनुकरण करके अपने श्रेष्ठ जीवन का निर्माण करते थे।"[13] ज्ञानार्जन के साथ छात्रों का प्रमुख उद्देश्य जीविकोपार्जन के साधन एवं सामाजिक जानकारी प्राप्त करना होता था।

वैदिक काल में अध्ययन की अवधि : वैदिक काल में अध्ययन की अवधि भी निश्चित थी क्योंकि ब्रह्मचर्य आश्रम के समय छात्र अध्ययन करते थे और गृहस्थ जीवन के समय भी आवश्यक ज्ञानवर्धन जानकारी के लिए गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त करते थे। "प्राचीन काल में अध्ययन की अवधि आमतौर पर 12 वर्ष थी। इस अवधि में छात्र केवल एक वेद का अध्ययन कर सकते थे। यदि वे एक से अधिक वेदों का अध्ययन करना चाहते थे, तो उनको प्रत्येक वेद के लिए 12 वर्ष अध्ययन करना पड़ता था। 12, 24, 36, और 48 वर्ष की आयु तक अध्ययन करने वाले छात्र क्रमशः स्नातक, बसु, रुद्र और आदित्य कहलाते थे। साहित्य और अर्थशास्त्र के छात्रों के अध्ययन की अवधि 10 वर्ष की थी।"[14]

वैदिक शिक्षण पद्धतियाँ : वैदिक काल में शिक्षक पद्धतियां आज के समय कहीं अधिक श्रेष्ठ, ज्ञानवर्धक एवं तर्कसंगत थी। इसमें छात्र गुरु से विधिवत् ज्ञान अर्जित करते थे।

प्रश्नोत्तर (प्रश्न-उत्तर) विधि :- इस प्रश्नोत्तरी विधि द्वारा शिष्य गुरुओं से प्रश्न पूछते थे और गुरु उनका उत्तर देते थे। इस विधि में शिष्य अपनी सभी समस्या के समाधान और उनके मन में कोई शंका हो उसका निदान भी आसानी से मिल जाता था। इस विधि में गुरु और शिष्य के मधुर संबंध स्थापित होते थे।

व्याख्यान विधि :- इस विधि में गुरु विस्तृत व्याख्यान देते थे और शिष्य शांत चित्त से सुनते थे, जिससे उन्हें ज्ञान प्राप्त होता था। वैदिक काल की सर्वश्रेष्ठ शिक्षण विधियों में से एक विधि थी।

वाद-विवाद और शास्त्रार्थ विधि :- उत्तर वैदिक काल में, उच्च शिक्षा में वरिष्ठ छात्रों और गुरुओं के बीच जटिल विषयों पर वाद-विवाद होता था, जिससे ज्ञान में वृद्धि होती थी। शिष्यों का आत्मविश्वास बढ़ता था। वैदिक काल की सर्वश्रेष्ठ शिक्षण परंपरा शास्त्रार्थ थी। शास्त्रार्थ करना छात्र जीवन का प्रमुख उद्देश्य होता था इसमें शिष्य ज्ञान का विस्तृत वर्णन करना होता था इसमें दो शिष्य आपस में अपने ज्ञान का व्याख्यान करते थे जो तर्कसंगत एवं न्याय आधारित होता था।

नायकीय पद्धति विधि :- गुरुकुलों में छात्रों की संख्या बढ़ने पर, वरिष्ठ और योग्य छात्रों को 'नायक' बनाया जाता

था, जो कनिष्ठ छात्रों को पढ़ाने का कार्य करते थे, जिससे गुरुओं का बोझ कम होता था और छात्रों को अध्यापन का प्रशिक्षण मिलता था।

गुरुकुल प्रणाली:- छात्रों का जीवन गुरु के परिवार के साथ होता था, जहाँ वे गुरु और उनके परिवार की सेवा करते थे, जिससे घनिष्ठ पारिवारिक संबंध बनते थे।

परिषदें:- ये विशाल शैक्षणिक संस्थान होते थे जहाँ अनेक शिक्षक विभिन्न विषयों को पढ़ाते थे और दार्शनिक मुद्दों पर चर्चा होती थी। ऐसे कार्यक्रमों में शिक्षक महत्वपूर्ण विषयों पर गहन अध्ययन के साथ चर्चाएं करते थे एवं विभिन्न प्रकार के मुद्दों पर अपना विचार रखते थे। गुरुकुलों के सभी छात्र इन परिषदों का हिस्सा बनकर ज्ञानार्जन करते थे।

सम्मेलन:- गुरुकुलों में विद्वानों की सभाएँ होती थीं जहाँ प्रतियोगिताएँ और चर्चाएँ होती थीं। अन्य गुरुकुलों के आचार्य भी आते थे एवं अपने अर्जित ज्ञान का व्याख्यान देकर गुरुकुलों के शिष्य का मार्गदर्शन करते थे। इस प्रकार के कार्यक्रम शाही संरक्षकों द्वारा आयोजित की जाती थीं।

संदर्भ सूची :

1. वैदिक साहित्य का इतिहास, प्रोफेसर पारस द्विवेदी, प्रकाशन- चौखंबा सुभारती प्रकाशन वाराणसी, पेज संख्या- 28.
2. प्राचीन भारतीय साहित्य, विंटरनिट्ज, प्रथम भाग, प्रथम खंड, प्रकाशन- मोतीलाल बनारसी दास वाराणसी, पृष्ठ संख्या- 63.
3. वही, पृष्ठ संख्या- 53.
4. मनुस्मृति, चौखंबा सुभारती प्रकाशन वाराणसी, अध्याय- 02, श्लोक संख्या-06.
5. महाभाष्य, पतंजलि, चौखंबा सुभारती प्रकाशन वाराणसी, पस्पशाह्निक संख्या – 01.
6. वैदिक साहित्य का इतिहास, प्रोफेसर पारस द्विवेदी, प्रकाशन- चौखंबा सुभारती प्रकाशन वाराणसी, पेज संख्या- 31.
7. प्राचीन भारतीय साहित्य, विंटरनिट्ज, प्रथम भाग, प्रथम खंड, प्रकाशन- मोतीलाल बनारसी दास वाराणसी, पृष्ठ संख्या- 48.
8. ज्ञान शौर्यम् शोध पत्रिका, डॉ. राजेश कुमार एवं डॉ. राजबीर सिंह, अंक 4, नवंबर-दिसंबर- 2021, पृष्ठ संख्या- 52.
9. वही, पृष्ठ संख्या- 52.
10. वही, पृष्ठ संख्या- 52.
11. वही, पृष्ठ संख्या- 53.
12. वही, पृष्ठ संख्या- 53.
13. वही, पृष्ठ संख्या- 53.
14. वही, पृष्ठ संख्या- 53.

•